This question paper contains 4 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

4559

B.A. (Programme)/I C

HINDI DISCIPLINE—Paper I

(हिंदी अनुशासन)

(हिंदी कविता, नाटक तथा हिंदी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात्—नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

टिप्पणी :—प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8

(क) अब लौं नसानी, अब न नसैहौं।

राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहौं॥

पायो नाम चारु चिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं।

स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं॥
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पन कै तुलसी, रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

(ख) जैसे बंधन प्रेम को, तैसो बंध न और।
काठहि भेदै कमल को, छेद न निकरै भौंर।
साँच झूठ निर्णय करै, नीति निपुण जो होय।
राजहंस बिन को करै, क्षीर नीर को दोय।

(ग) उगे अरुणाचल मे रवि,
आई भारती-रति कवि-कण्ठ में,
क्षण-क्षण में परिवर्तित
होते रहे प्रकृति पट,
गया दिन, आई रात,
गई रात, खुला दिन,
ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास,
वर्ष कितने ही हजार—
जागो फिर एक बार!

2. कबीर **अथवा** जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए। 7

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित काव्यांशों के आधार पर किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) 'यह धरती है उस किसान की' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

(ख) बिहारी के नीतिपरक दोहों में क्या उपदेश दिया गया है ?

(ग) 'जयद्रथ वध' में कवि ने मानव को क्या संदेश दिया है ?

(घ) 'नागार्जुन की कविताएँ जनवादी कविताएँ हैं'—इस कथन की समीक्षा कीजिए। 6-6

4. किसी **एक** अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अब भी उत्साह का अनुभव नहीं होता ···? विश्वास करो तुम यहाँ से जाकर भी यहाँ से अलग नहीं होओगे। यहाँ की वायु, यहाँ के मेघ और यहाँ के हरिण, इन सबको तुम साथ ले जाओगे ···। और मैं भी तुमसे दूर नहीं होऊँगी। जब भी तुम्हारे निकट होना चाहूँगी, पर्वत शिखर पर चली जाऊँगी और उड़कर आते मेघों में घिर जाया करूँगी।

अथवा

मैं कब कहता हूँ कि दूसरा अर्थ नहीं है ? अर्थ बहुत स्पष्ट है। वे यहाँ की हर वस्तु को विचित्र के रूप में देखते हैं और उस वैचित्र्य को यहाँ से जाकर दूसरों को दिखानः चाहते हैं। तुम, मैं, यह घर, वे पर्वत, सब उनके लिए विचित्र के उदाहरण हैं। मैं तो उनकी सूक्ष्म और समर्थ दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ जो यहाँ वैचित्र्य नहीं, वहाँ भी वैचित्र्य देख लेती है। एक कलाकार को मैंने यहाँ की धूप में अपनी छाया की अनुकृति बनाते देखा है। 8

5. विलोम **अथवा** कालिदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। 12

6. (क) संत काव्यधारा **अथवा** कृष्ण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। 10

(ख) द्विवेदी युगीन कविता **अथवा** प्रगतिवादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। 10